शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

नयी तालीम का छद्म संस्करण
साबित हुई है सेमेस्टर प्रणाली

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

मध्यप्रदेश में उच्च शिक्षा में जारी सेमेस्टर प्रणाली समाप्त करने पर विचार किया जा रहा है। इसके लिए उच्च शिक्षा विभाग ने सभी कालेजों से सुझाव मांगे हैं। वास्तव में जब सेमेस्टर प्रणाली को वर्ष 2009 में लागू किया गया, तब से इसके विरोध और समर्थन में आवाजें उठती रही हैं। अनेक महाविद्यालयों ने इस व्यवस्था के गुण-दोष पर विचार करने के लिए चिंतन शिविर और व्याख्यान आयोजित किए और अपनी भावना से उच्च शिक्षा विभाग को अवगत कराया। चिंतनशील विद्यार्थियों के समूह ने भी सेमेस्टर पद्धति की खामियों को लेकर धरना, प्रदर्शन, ज्ञापन आदि का रास्ता अपनाया। लेकिन उच्च शिक्षा के महारथियों के सुझाव को दरकिनार कर दिया गया। वैश्वीकरण के बाद उच्च शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाने के बहुतेरे प्रयास हुए। बहुत समय से संचालित हो रहे एक जैसे पाठ्यक्रमों में बदलाव कर उसे आज की आवश्यकता के अनुरूप बनाया गया। सब कुछ करने के बाद भी वह परिणाम दिखाई नहीं दिए, जैसी अपेक्षा की गई थी। वार्षिक पद्धति से संचालित होने वाले पाठ्यक्रमों में जैसे-जैसे सुधार किए गए, कालेजों का सूनापन बढ़ता चला गया। इससे निजात पाने के लिए सेमेस्टर प्रणाली लागू की गई। जैसी कि आशा व्यक्त की गई थी कि सेमेस्टर प्रणाली के फलस्वरूप कालेजों में छात्रों की उपस्थिति बढ़ेगी। आंतरिक मूल्यांकन होने से विद्यार्थी का सतत मूल्यांकन होगा। परिसर में अनुशासित शैक्षणिक वातावरण निर्मित होगा। सेमिनार, प्रोजेक्ट के कारण विद्यार्थियों में शोध वृत्ति का विकास होगा। एक सेमेस्टर में जॉब इंटर्नशिप होने से विद्यार्थी को कार्यानुभव प्राप्त होगा। समय प्रबंधन और अवकाश के दिन कम होने से अध्ययन गहराई से होगा। जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे इस प्रणाली के दोष उजागर होते गए। उच्च शिक्षा विभाग ने सारे संचालन सूत्र अपने हाथ में लेकर विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता को समाप्त कर दिया। वर्तमान में चल रहे सेमेस्टर पाठ्यक्रमों के साथ सबसे बड़ी कठिनाई यह रही कि न तो परीक्षाएं समय पर हुई और न ही परिणाम समय पर घोषित हुए। इसका खामियाजा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ा। अनेक विद्यार्थियों को अपना कैरियर प्रारंभ करने में एक से डेढ़ वर्ष का अतिरिक्त समय लगा। सेमेस्टर प्रणाली में शैक्षणिक गुणवत्ता के सुधार की बात कही गई, परंतु यह देखने में आया कि विद्यार्थी गाइड परायण हो गया। प्रतिस्पर्धी दौर में कोई भी कालेज आंतरिक मूल्यांकन में विद्यार्थी को अनुत्तीर्ण करने में हिचकता है। आंतरिक मूल्यांकन की पुख्ता नीति न होने से पूरी पद्धति पर प्रश्नचिह्न लग गया। विद्यार्थी को आंतरिक मूल्यांकन में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त होने लगे, परंतु बाह्य परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने लगा। सेमेस्टर प्रणाली लागू होने के बाद

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विद्यार्थियों पर शिक्षण शुल्क, परीक्षा शुल्क आदि का बोझ बहुत बढ़ गया। इससे गरीब विद्यार्थी परेशान हैं। वास्तव में सेमेस्टर प्रणाली नयी तालीम का छद्म संस्करण साबित हुई है। सेमेस्टर प्रणाली के माध्यम से प्रदेश की उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार के जितने सपने संजोये गए थे, वे सब धराशायी हो गए। अनेक बंधनों में जकड़ी हुई उच्च शिक्षा आज आजादी के लिए कसमसा रही है, जबकि ज्ञानाधारित समाज में सारे बंधन ढीले होते जा रहे हैं। आज अंतरअनुशासनिक ज्ञान का महत्व बढ़ गया है। वाणिज्य के छात्र के लिए विज्ञान और कला का, विज्ञान के छात्र के लिए कला और वाणिज्य का, कला के छात्र के लिए वाणिज्य और विज्ञान का ज्ञान आज के युग की आवश्यकता है। एक तरह से कहा जा सकता है कि एक पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले छात्र को अपना सब कुछ और दूसरों का कुछ-कुछ ज्ञान होना चाहिए। दुर्भाग्य से उच्च शिक्षा में ऐसा नहीं दिखाई पड़ रहा है। आज शिक्षा में छात्रों को मूल्यों की जानकारी तो हो रही है, परंतु नैतिक और सामाजिक मूल्यों को जानने की उसकी न तो तैयारी है और न ही उच्च शिक्षा में ऐसी कोई योजना है। मध्यप्रदेश में उच्च शिक्षा के योजनाकारों ने प्लेटो के सिद्धांत का अनुसरण करते हुए व्यावसायिक और वैज्ञानिक शिक्षा के नाम पर साहित्य को देश निकाला दे दिया है। विषय और संकायों में बंधी-बंधाई नालियों में बहने वाली इस डिग्री केंद्रित शिक्षा ने देश और समाज का बहुत नुकसान किया है। आज विद्यार्थी का पच्चीस साल का समय आजीविका के लिए शिक्षा हासिल करने में जा रहा है। जीवन और शिक्षण दोनों अलग-अलग पड़े हुए हैं। आज की उच्च शिक्षा में श्रम का कहीं कोई स्थान नहीं है। इसलिए उच्च शिक्षा में किताबी शिक्षण के बजाय उद्योग पर ज्यादा जोर देना चाहिए। कम-से-कम तीन घंटे उद्योग के लिए निर्धारित किए जाएं। उसके बिना अध्ययन तेजस्वी नहीं हो सकता। आज राष्ट्र को स्वावलंबी सेवक की जरूरत है, जिसकी पूर्ति कालेजों में उद्योगप्रधान शिक्षण देकर की जा सकती है। अब उच्च शिक्षा को लेकर और अधिक प्रयोग न हों। समग्र चिंतन करके विचार को लागू करने की आवश्यकता है। आखिर देश के भविष्य का प्रश्न है।